SHODH SAGAR®
Universal Research Reports
ISSN: 2348-5612 | Vol. 11 | Issue 2 | Apr-Jun 2024 | Peer Reviewed & Refereed

विष्णु पुराण का आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अध्ययन – 2

डॉ आशाराम सगर *
शोध निदेशक, विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग
शासकीय महाविद्यालय गोहद भिण्ड मध्यप्रदेश

डॉ मनीष खेमरिया
सह शोध निदेशक विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग
महारानी लक्ष्मीबाई उत्कृष्ट महाविद्यालय ग्वालियर मध्यप्रदेश

बृजेश कुमार
शोधार्थी संस्कृत

Published: 23/05/2024 *Corresponding Author

सार

हिंदू धर्म के अठारह मुख्य पुराणों में से एक, विष्णु पुराण भारत की संस्कृति और आध्यात्मिकता के लिए महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन पत्र विष्णु पुराण की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक शिक्षाओं की खोज करता है ताकि इसकी प्रासंगिकता को पूरी तरह से समझा जा सके। ऋषि पराशर ने पहली और चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के बीच विष्णु पुराण लिखा था, जो प्राचीन भारत के सामाजिक–राजनीतिक और धार्मिक माहौल को दर्शाता है। छह खंडों में, पराशर और मैत्रेय ने एक संवाद में ब्रह्मांड विज्ञान, पौराणिक कथाओं, वंशावली और अनुष्ठानों पर चर्चा की। विष्णु पुराण के विषयों में ब्रह्मांड का निर्माण और विघटन, लौकिक चक्र और ब्रह्मांडीय चक्र शामिल हैं। यह विष्णु के 10 अवतारों का वर्णन करता है, ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बहाल करने के लिए दैवीय हस्तक्षेप पर जोर देता है, और धर्म और भक्ति पर जोर देता है। पुराण के अनुसार, नैतिकता और विष्णु भक्ति मोक्ष की ओर ले जाती है। भारतीय साहित्य, शास्त्रीय नृत्य, संगीत और रंगमंच विष्णु पुराण से प्रभावित हैं। कई पारंपरिक अनुष्ठानों और त्योहारों में पुराण से कृष्ण और राम की कहानियाँ शामिल हैं, जो भारतीय संस्कृति पर इसके मजबूत प्रभाव को दर्शाती हैं। आध्यात्मिक रूप से, यह पूजा को नैतिक जीवन के साथ जोड़ता है, एक वर्तमान आध्यात्मिक दर्शन प्रदान करता है। यह अध्ययन विष्णु पुराण की ऐतिहासिक सेटिंग, कथा संरचना और आवश्यक विषयों की खोज करता है ताकि भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता पर इसके स्थायी प्रभाव को समझा जा सके। शोध प्राचीन भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को बनाए रखने और बढ़ावा देने में विष्णु पुराण की शाश्वत बुद्धिमत्ता पर जोर देता है। इस जांच के माध्यम से, विष्णु पुराण एक महत्वपूर्ण साहित्य बन जाता है जो आज लाखों लोगों को प्रेरित करता है।

परिचय

विष्णु पुराण हिंदू धार्मिक साहित्य के संग्रह में सबसे अधिक पूजनीय और प्रभावशाली ग्रंथों में से एक है। अठारह महापुराणों में से एक के रूप में, यह भारत के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में एक केंद्रीय स्थान रखता है। पारंपरिक रूप से ऋषि पराशर को जिम्मेदार ठहराया गया, विष्णु पुराण संस्कृत में रचित है और माना जाता है कि इसे पहली शताब्दी ईसा पूर्व और चौथी शताब्दी ई.पू. के बीच लिखा गया था। यह ग्रंथ न केवल एक धार्मिक ग्रंथ के रूप में बल्कि एक ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में भी कार्य करता है जो अपने समय के सामाजिक–राजनीतिक और धार्मिक परिवेश को दर्शाता है।

विष्णु पुराण मुख्य रूप से हिंदू धर्म के प्रमुख देवताओं में से एक, विष्णु को समर्पित एक भक्ति ग्रंथ है। विष्णु को ब्रह्मांड के संरक्षक और रक्षक के रूप में सम्मानित किया जाता है, और पुराण में उनके आख्यान

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

उनके विभिन्न अवतारों या अवतारों के माध्यम से ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने में उनकी भूमिका पर जोर देते हैं। पुराण को छह पुस्तकों में विभाजित किया गया है, जिनमें से प्रत्येक ब्रह्मांड विज्ञान, पौराणिक कथाओं, वंशावली और अनुष्ठानों के विभिन्न पहलुओं से निपटती है। इसकी संरचना संवादात्मक है, जिसमें ऋषि पराशर और उनके शिष्य मैत्रेय के बीच संवाद शामिल हैं, जो इसकी शिक्षाओं को एक कथात्मक प्रारूप में व्यक्त करने में मदद करता है जो सुलभ और आकर्षक है।

विष्णु पुराण के केंद्र में सृजन और प्रलय, समय की चक्रीय प्रकृति और विष्णु के दस अवतार हैं, जिनमें राम और कृष्ण जैसे प्रसिद्ध व्यक्ति शामिल हैं। यह पाठ धर्म और भक्ति के सिद्धांतों को रेखांकित करता है, नैतिक मूल्यों द्वारा निर्देशित जीवन और मोक्ष (मुक्ति) प्राप्त करने के साधन के रूप में विष्णु के प्रति समर्पण की वकालत करता है।

विष्णु पुराण का सांस्कृतिक प्रभाव बहुत बड़ा है। इसकी कहानियों और शिक्षाओं ने भारतीय संस्कृति में कला, साहित्य, संगीत और नृत्य के अनगिनत कार्यों को प्रेरित किया है। त्यौहार, अनुष्ठान और लोक परंपराएँ इसके समृद्ध आख्यानों से आकर्षित होती रहती हैं, जो इसके स्थायी प्रभाव को प्रदर्शित करती हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य विष्णु पुराण की आध्यात्मिक शिक्षाओं और सांस्कृतिक महत्व में गहराई से जाना है, जो भारतीय आध्यात्मिकता और संस्कृति में इसकी स्थायी विरासत की व्यापक समझ प्रदान करता है। इसके ऐतिहासिक संदर्भ, कथात्मक संरचना और प्रमुख विषयों की खोज करके, यह अध्ययन इस प्राचीन ग्रंथ में संरक्षित कालातीत ज्ञान और सांस्कृतिक विरासत को उजागर करने का प्रयास करता है।

ऐतिहासिक संदर्भ

महापुराणों के रूप में वर्गीकृत प्राचीन ग्रंथों में से एक विष्णु पुराण हिंदू साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसकी रचना आम तौर पर पहली शताब्दी ईसा पूर्व और चौथी शताब्दी ई. के बीच की मानी जाती है, जो प्राचीन भारत में महत्वपूर्ण सामाजिक–राजनीतिक और धार्मिक परिवर्तनों द्वारा चिह्नित अवधि है। विष्णु पुराण सहित पौराणिक साहित्य उस समय उभरा जब वैदिक परंपराएँ शास्त्रीय हिंदू धर्म की विशेषता वाली अधिक विविध और समावेशी प्रथाओं में परिवर्तित हो रही थीं। इस पाठ को पारंपरिक रूप से हिंदू पौराणिक कथाओं और दर्शन में एक प्रमुख व्यक्ति ऋषि पाराशर के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है। विष्णु पुराण की रचना संभवतः विभिन्न चरणों और परतों में की गई थी, जो लिखित रूप में संहिताबद्ध होने से पहले मौखिक परंपरा की तरलता को दर्शाती है। इस अवधि में विभिन्न क्षेत्रीय मिथकों, अनुष्ठानों और देवताओं को एक अधिक एकीकृत हिंदू धार्मिक ढांचे में समेकित किया गया। इसकी रचना की शताब्दियों के दौरान, भारत ने मौर्य, शुंग, सातवाहन और गुप्त साम्राज्यों जैसे कई राजवंशों के उत्थान और पतन का अनुभव किया। इन राजनीतिक संस्थाओं ने हिंदू धार्मिक प्रथाओं के प्रसार और समर्थन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गुप्त काल, जिसे अक्सर भारत का स्वर्ण युग कहा जाता है, पौराणिक ग्रंथों सहित कला, विज्ञान और साहित्य के उत्कर्ष में विशेष रूप से सहायक था। इस युग के दौरान हिंदू धर्म के संरक्षण ने विष्णु पुराण जैसे ग्रंथों को प्रमुखता और व्यापक स्वीकृति प्राप्त करने की अनुमति दी। विष्णु पुराण अपने समय के धार्मिक समन्वय को दर्शाता है, जो वैदिक परंपराओं को स्थानीय पंथों और प्रथाओं के साथ एकीकृत करता है। यह ब्रह्माण्ड संबंधी और धार्मिक विषयों को संबोधित करता है, एक व्यापक कथा प्रदान करता है जो विष्णु के ब्रह्मांडीय कार्यों को दैनिक जीवन के नैतिक और भक्ति पहलुओं से जोड़ता है। वैदिक और लोकप्रिय धार्मिक तत्वों के इस संश्लेषण ने विष्णु के इर्द–गिर्द केंद्रित पूजा के एक अधिक सुसंगत और सुलभ रूप को स्थापित करने में मदद की, जो व्यापक दर्शकों को आकर्षित करता है। विष्णु पुराण में विष्णु के अवतारों, विशेष रूप से कृष्ण और राम पर जोर दिया गया है, जो

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

वैष्णववाद की बढ़ती लोकप्रियता के अनुरूप है, जो हिंदू धर्म का एक प्रमुख संप्रदाय है जो विष्णु और उनके अवतारों की पूजा के लिए समर्पित है। यह ध्यान उस अवधि के भक्ति आंदोलनों को दर्शाता है, जिसने व्यक्तिगत भक्ति (भक्ति) और जाति या सामाजिक स्थिति की परवाह किए बिना सभी अनुयायियों के लिए दिव्य कृपा की पहुँच पर जोर दिया। विष्णु पुराण का ऐतिहासिक संदर्भ प्राचीन भारत के गतिशील सामाजिक–राजनीतिक और धार्मिक परिदृश्य से गहराई से जुड़ा हुआ है। इसकी रचना और उसके बाद की प्रमुखता धार्मिक समेकन, क्षेत्रीय एकीकरण और भक्ति पर जोर देने की व्यापक प्रवृत्तियों को दर्शाती है जो भारतीय इतिहास में इस परिवर्तनकारी अवधि की विशेषता थी।

कथात्मक संरचना

विष्णु पुराण को संवादात्मक प्रारूप में जटिल रूप से संरचित किया गया है, जिसमें मुख्य रूप से ऋषि पराशर और उनके शिष्य मैत्रेय के बीच संवादों की एक श्रृंखला शामिल है। यह संवादात्मक विधि पाठ की शिक्षाओं को आकर्षक और सुलभ तरीके से व्यक्त करने का काम करती है। पुराण को छह अलग–अलग भागों या अंशों में विभाजित किया गया है, जिनमें से प्रत्येक हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान, पौराणिक कथाओं और नैतिकता के लिए केंद्रीय विभिन्न विषयों और विषयों को शामिल करता है।

पुस्तक 1 (अंश 1) ब्रह्मांड के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करती है, जो ब्रह्मांड की उत्पत्ति और संरचना की व्याख्या करने वाले ब्रह्मांडीय ढांचे के साथ मंच तैयार करती है। इस खंड में मानवता के पूर्वज मनु और विष्णु के दस अवतारों (अवतारों) के बारे में विस्तृत कथाएँ शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक व्यवस्था और धर्म (धार्मिकता) को बहाल करने के लिए ब्रह्मांडीय घटनाओं में हस्तक्षेप करता है। ये अवतार, जिनमें मत्स्य (मछली), कूर्म (कछुआ), और वराह (सूअर) जैसी प्रसिद्ध आकृतियाँ शामिल हैं, ब्रह्मांड के संरक्षक के रूप में विष्णु की भूमिका को उजागर करते हैं। पुस्तक 2 (अंसा 2) पृथ्वी और सौर मंडल का एक व्यापक भौगोलिक विवरण प्रदान करती है, जिसमें पौराणिक तत्वों को प्रारंभिक वैज्ञानिक विचारों के साथ मिश्रित किया गया है। यह देवताओं, ऋषियों और राजाओं की वंशावली पर विस्तार से प्रकाश डालता है, जिसमें विभिन्न दिव्य और अर्ध–दिव्य प्राणियों की उत्पत्ति और वंश का विवरण दिया गया है। यह वंशावली ढांचा ब्रह्मांडीय व्यवस्था को स्थलीय क्षेत्र से जोड़ता है, जो सभी अस्तित्व की परस्पर संबद्धता को दर्शाता है। पुस्तक 3 (अंसा 3) विभिन्न राजाओं की कहानियों को याद करती है, जो उनके जीवन से प्राप्त नैतिक और नैतिक पाठों पर जोर देती है। इस पुस्तक का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भगवान विष्णु के सबसे प्रसिद्ध अवतारों में से एक कृष्ण के जीवन को समर्पित है। कृष्ण के कारनामे, महाभारत में उनकी भूमिका और भगवद गीता में अर्जुन को दी गई उनकी शिक्षाएँ केंद्रीय विषय हैं, जो उनके दिव्य मिशन और धर्म और भक्ति (भक्ति) के सिद्धांतों को रेखांकित करती हैं। पुस्तक 4 (अंसा 4) सौर और चंद्र राजवंशों के राजवंशीय इतिहास में तल्लीन है, जो क्रमशः सूर्य और चंद्रमा से अपनी वंशावली का पता लगाते हैं। ये वंशावली राजाओं और उनके शासनकाल का एक ऐतिहासिक और पौराणिक विवरण प्रदान करती हैं, उन्हें दिव्य वंश से जोड़ती हैं और उनके शासन को वैध बनाती हैं। यह खंड शाही अधिकार की निरंतरता और सांसारिक राजत्व के पीछे दिव्य स्वीकृति को दर्शाता है। पुस्तक 5 (अंसा 5) कृष्ण के जीवन का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत करती है, जो उनके चमत्कारी जन्म, बचपन के कारनामों और एक राजकुमार और राजनेता के रूप में उनकी भूमिका पर केंद्रित है। इस पुस्तक में कृष्ण के दार्शनिक प्रवचन और शिक्षाएँ भी शामिल हैं, जो भक्ति परंपरा का मूल आधार हैं। विभिन्न पात्रों के साथ उनकी बातचीत, कुरुक्षेत्र युद्ध में उनकी भूमिका और भक्तों को उनका मार्गदर्शन उनकी बहुमुखी दिव्य प्रकृति को उजागर करता है। पुस्तक 6 (अंसा 6) दुनिया के अंत का वर्णन करती है, जिसे प्रलय के रूप में जाना जाता है, और हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में समय की चक्रीय प्रकृति। यह विष्णु के भविष्य के अवतारों, विशेष रूप से कल्कि के बारे में

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

भविष्यवाणी करता है, जिनके बारे में भविष्यवाणी की गई है कि वे वर्तमान युग (कलियुग) के अंत में धार्मिकता को बहाल करने के लिए प्रकट होंगे। यह युगांतकारी कथा सृष्टि, संरक्षण और विघटन के सतत चक्र को रेखांकित करती है, जो ब्रह्मांड की शाश्वत और गतिशील प्रकृति की पुष्टि करती है। इन छह भागों के माध्यम से, विष्णु पुराण ब्रह्मांड विज्ञान, पौराणिक कथाओं, इतिहास और नैतिकता का एक समृद्ध ताना–बाना बुनता है, जो ब्रह्मांड और उसके भीतर मानवता के स्थान का एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है। प्रत्येक अंश संरक्षक के रूप में विष्णु की भूमिका के व्यापक विषय में योगदान देता है, भक्तों को धार्मिकता और भक्ति के जीवन की ओर मार्गदर्शन करता है।

ब्रह्मांड विज्ञान और सृजन

विष्णु पुराण ब्रह्मांड विज्ञान और सृजन प्रक्रिया का एक व्यापक और जटिल विवरण प्रस्तुत करता है, जो समय और ब्रह्मांड की चक्रीय प्रकृति पर जोर देता है। यह प्राचीन ग्रंथ एक विस्तृत कथा प्रदान करता है जो ब्रह्मांड की उत्पत्ति से लेकर उसके अंतिम विघटन तक फैली हुई है, जो सृजन और विनाश के एक शाश्वत आवर्ती चक्र के हिंदू विश्वदृष्टिकोण को समाहित करती है।

ब्रह्मांड का निर्माण

विष्णु पुराण के अनुसार, ब्रह्मांड सृजन (सृष्टि), संरक्षण (स्थिति) और विघटन (प्रलय) के एक सतत चक्र से गुजरता है। यह चक्रीय प्रक्रिया विष्णु द्वारा संचालित की जाती है, जो प्रत्येक चरण में अलग–अलग रूप और भूमिकाएँ ग्रहण करते हैं। सृष्टि की शुरुआत ब्रह्मांडीय जल से होती है, जो ब्रह्मांड की आदिम अवस्था का प्रतीक है, जहाँ विष्णु, नारायण के रूप में, सर्प अनंत (जिसे शेष भी कहा जाता है) पर विश्राम करते हैं।

विष्णु की नाभि से एक कमल निकलता है, जिस पर सृष्टिकर्ता देवता ब्रह्मा का जन्म होता है। ब्रह्मा को तब ब्रह्मांड बनाने के लिए ज्ञान और शक्ति से संपन्न किया जाता है। वह मूल तत्वों का निर्माण करके इस प्रक्रिया की शुरुआत करता है, उसके बाद देवताओं, ऋषियों, राक्षसों और मनुष्यों सहित विभिन्न आकाशीय और स्थलीय प्राणियों का निर्माण करता है। सृजन का यह कार्य ब्रह्मांडीय अस्तित्व के चल रहे नाटक के लिए मंच तैयार करता है, जहाँ प्रत्येक इकाई ब्रह्मांड के संतुलन को बनाए रखने में भूमिका निभाती है।

समय की चक्रीय प्रकृति

विष्णु पुराण समय की अवधारणा को एक चक्रीय घटना के रूप में विस्तृत करता है, जिसे चार युगों (युगों) में विभाजित किया गया हैरू

1. सत्य युगरू स्वर्ण युग के रूप में भी जाना जाता है, यह सत्य, पुण्य और धार्मिकता का काल है, जहाँ धर्म (नैतिक व्यवस्था) अपनी संपूर्णता में प्रबल होता है।
2. त्रेता युगरू रजत युग, जहाँ धर्म एक–चौथाई तक कम हो जाता है। इस युग में भगवान विष्णु के अवतार राम जैसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों का आगमन होता है।
3. द्वापर युगरू कांस्य युग, जहाँ धर्म आधा रह जाता है। यह युग महाभारत की घटनाओं और कृष्ण के जीवन से चिह्नित है।
4. कलियुगरू लौह युग, जिसमें धर्म में महत्वपूर्ण गिरावट होती है, जिसमें धार्मिकता का केवल एक–चौथाई हिस्सा ही बचा रहता है। यह नैतिक पतन और संघर्ष का युग है, जो अंततः चक्र के अंत और भगवान विष्णु के अवतार, कल्कि के आगमन की भविष्यवाणी की ओर ले जाता है।

ब्रह्मांडीय चक्र (कल्प)

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

विष्णु पुराण में, समय को आगे बड़े ब्रह्मांडीय चक्रों में विभाजित किया गया है जिन्हें कल्प के रूप में जाना जाता है। प्रत्येक कल्प में 1000 महायुग (महान युग) होते हैं, जिसमें प्रत्येक महायुग में चार पूर्वोक्त युग शामिल होते हैं। ब्रह्मा का एक दिन (कल्प) 4.32 बिलियन मानव वर्षों के बराबर होता है, और उनका जीवनकाल ऐसे दिनों के 100 वर्षों तक फैला होता है, जो महा–प्रलय (महान विघटन) में समाप्त होता है जब संपूर्ण ब्रह्मांड वापस विष्णु में समाहित हो जाता है।

प्रलय के दौरान, ब्रह्मांड अपने प्रकट रूप में मौजूद नहीं रहता है, और सभी तत्व विष्णु के भीतर अपनी आदिम अवस्था में लौट आते हैं। विघटन की इस अवधि के बाद, चक्र एक नए सृजन के साथ नए सिरे से शुरू होता है, जो ब्रह्मांड की शाश्वत और गतिशील प्रकृति का प्रतीक है।

विष्णु पुराण की ब्रह्मांड संबंधी कथा भौतिक दुनिया की क्षणभंगुर प्रकृति और ब्रह्मांडीय चक्रों की शाश्वत निरंतरता को रेखांकित करती है। यह सृष्टि के संरक्षक और पालनकर्ता के रूप में विष्णु की भूमिका पर प्रकाश डालता है, जो सृजन, संरक्षण और विघटन की चल रही प्रक्रिया को सुनिश्चित करता है। यह ब्रह्माण्ड संबंधी ढांचा न केवल ब्रह्मांड की आध्यात्मिक समझ प्रदान करता है, बल्कि गहन आध्यात्मिक और नैतिक सबक भी देता है, जो मुक्ति के मार्ग के रूप में धर्म और विष्णु के प्रति समर्पण का पालन करने को प्रोत्साहित करता है।

विष्णु के अवतार

विष्णु पुराण में विष्णु के अवतारों या अवतारों की अवधारणा को प्रमुखता से दर्शाया गया है, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था और धर्म को बहाल करने के लिए नश्वर क्षेत्र में उतरते हैं। ये अवतार पुराण की कथा के केंद्र में हैं, जिनमें से प्रत्येक संकट के समय में दिव्य हस्तक्षेप को दर्शाता है। विष्णु के दस प्रमुख अवतार, जिन्हें सामूहिक रूप से दशावतार के रूप में जाना जाता है, ब्रह्मांड के संरक्षक और रक्षक के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाते हैं।

1. मत्स्य (मछली)रू इस अवतार में, विष्णु पवित्र वेदों को बचाते हैं और ऋषि मनु को एक महान जल प्रलय से बचाते हैं, जो पवित्र ज्ञान की सुरक्षा और जीवन के संरक्षण का प्रतीक है।
2. कूर्म (कछुआ)रू विष्णु, एक विशाल कछुए के रूप में, देवताओं और राक्षसों द्वारा समुद्र मंथन के दौरान मंदरा पर्वत का समर्थन करते हैं, दिव्य अमृत (अमृत) की पुनर्प्राप्ति में सहायता करते हैं और ब्रह्मांडीय संतुलन सुनिश्चित करते हैं।
3. वराह (सूअर)रू एक सूअर का रूप लेते हुए, विष्णु पृथ्वी (देवी भूदेवी के रूप में) को राक्षस हिरण्याक्ष से बचाने के लिए ब्रह्मांडीय महासागर में गोता लगाते हैं, जो अराजकता से व्यवस्था की बहाली का प्रतिनिधित्व करता है।
4. नरसिंह (मनुष्य–सिंह)रू विष्णु अपने भक्त प्रह्लाद की रक्षा करने और अत्याचारी राक्षस हिरण्यकश्यप को हराने के लिए आधे मनुष्य, आधे शेर के रूप में प्रकट होते हैं, जो बुराई पर भक्ति की जीत का प्रतीक है।
5. वामन (बौना)रू इस अवतार में, विष्णु राक्षस राजा बलि को वश में करने के लिए एक बौने ब्राह्मण के रूप में अवतार लेते हैं, अपने ब्रह्मांडीय कदमों के माध्यम से तीनों लोकों को पुनः प्राप्त करते हैं, जो विनम्रता और धार्मिकता का प्रतीक है।
6. परशुराम (कुल्हाड़ी वाला योद्धा)रू कुल्हाड़ी चलाने वाले योद्धा के रूप में विष्णु, न्याय और व्यवस्था को बहाल करने के लिए भ्रष्ट क्षत्रिय (योद्धा) वर्ग का उन्मूलन करते हैं, जो धार्मिकता और नैतिक शासन के महत्व पर प्रकाश डालता है।

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

7. रामरू अयोध्या के राजकुमार, विष्णु के राम अवतार आदर्श राजा, पति और पुत्र का उदाहरण हैं। उनका जीवन और कर्म, विशेष रूप से राक्षस राजा रावण की हार, धर्म और सदाचारी नेतृत्व के सिद्धांतों को रेखांकित करते हैं।
8. कृष्णरू शायद सबसे प्रसिद्ध अवतार, कृष्ण का जीवन और शिक्षाएँ, जिसमें महाभारत और भगवद गीता में उनकी भूमिका शामिल है, दिव्य प्रेम, ज्ञान और भक्ति (भक्ति) का सार है।
9. बलरामरू अक्सर अवतार माने जाने वाले बलराम कृष्ण के बड़े भाई हैं और शक्ति और कर्तव्य का प्रतिनिधित्व करते हैं, महाभारत और अन्य ग्रंथों के कृष्ण–केंद्रित आख्यानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
10. कल्किरू भविष्य के अवतार, कल्कि के बारे में भविष्यवाणी की गई है कि वे वर्तमान कलियुग के अंत में बुराई को हराने और धार्मिकता के एक नए युग का उद्घाटन करने के लिए प्रकट होंगे, जो आशा और नवीनीकरण का प्रतीक है।

ये अवतार ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने और धर्म की रक्षा करने के लिए विष्णु की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं, प्रत्येक अवतार विशिष्ट ब्रह्मांडीय चुनौतियों को संबोधित करने के लिए तैयार किया गया है। इन दिव्य अवतरणों के माध्यम से, विष्णु पुराण गहन नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा प्रदान करता है, जो दिव्य और नश्वर क्षेत्रों के बीच गतिशील बातचीत पर जोर देता है।

धर्म और भक्ति

विष्णु पुराण आध्यात्मिक जीवन और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के मूलभूत पहलुओं के रूप में धर्म (धार्मिकता) और भक्ति (भक्ति) के सिद्धांतों पर जोर देता है। ये अवधारणाएँ पूरे पाठ में बुनी गई हैं, जो ब्रह्मांड में संतुलन और सद्भाव बनाए रखने में उनके महत्व को दर्शाती हैं।

धर्म

विष्णु पुराण में धर्म को ब्रह्मांड को बनाए रखने वाले मूलभूत सिद्धांत के रूप में चित्रित किया गया है। इसमें कर्तव्य, धार्मिकता, नैतिक आचरण और कानून शामिल हैं जो ब्रह्मांडीय और सामाजिक दोनों व्यवस्थाओं को नियंत्रित करते हैं। पुराण धर्म की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए कई आख्यान और उदाहरण प्रदान करता है, जो इसकी बहुमुखी प्रकृति पर जोर देता है। यह ग्रंथ व्यक्ति के स्वधर्म या व्यक्तिगत कर्तव्य का पालन करने के महत्व पर प्रकाश डालता है, जो व्यक्ति के जीवन के चरण (आश्रम) और सामाजिक भूमिका (वर्ण) के अनुसार भिन्न होता है। उदाहरण के लिए, राजाओं और योद्धाओं के धर्मी कार्य, जैसा कि राम और परशुराम जैसे अवतारों द्वारा दर्शाया गया है, लोगों के नेतृत्व और सुरक्षा के धर्म को रेखांकित करते हैं। इसी तरह, ऋषियों और भक्तों की कहानियाँ आध्यात्मिक खोज और नैतिक जीवन के धर्म को दर्शाती हैं।

धर्म को एक गतिशील और परिस्थितिजन्य अवधारणा के रूप में दर्शाया गया है, जिसमें व्यक्तियों को सत्य और न्याय के व्यापक सिद्धांतों को बनाए रखते हुए परिस्थितियों के अनुसार कार्य करने की आवश्यकता होती है। धर्म का पालन करके, व्यक्ति ब्रह्मांड की समग्र सद्भाव और स्थिरता में योगदान करते हैं, अपने कार्यों को विष्णु की दिव्य इच्छा के साथ जोड़ते हैं।

भक्ति

भक्ति, या भगवान के प्रति समर्पण, विष्णु पुराण में एक केंद्रीय विषय है। यह ग्रंथ भगवान विष्णु के साथ एक व्यक्तिगत और प्रेमपूर्ण संबंध विकसित करने के महत्व को रेखांकित करता है, जो अटूट विश्वास, श्रद्धा और समर्पण की विशेषता है। भक्ति को मोक्ष (मुक्ति) के लिए एक शक्तिशाली और सुलभ मार्ग के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जो कर्मकांड प्रथाओं और तपस्वी अनुशासन की सीमाओं को पार करता है।

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

ISSN: 2348-5612 | Vol. 11 | Issue 2 | Apr-Jun 2024 | Peer Reviewed & Refereed

पुराण में ऐसे भक्तों की कई कहानियाँ हैं जो अपनी सच्ची भक्ति के माध्यम से दिव्य कृपा प्राप्त करते हैं। इनमें से प्रमुख है प्रह्लाद की कहानी, जिसका विष्णु में अटूट विश्वास उसे उसके अत्याचारी पिता हिरण्यकश्यप से बचाता है। इसी तरह, कृष्ण का जीवन और गोपियों और अर्जुन सहित उनके भक्तों के साथ उनकी बातचीत, भक्ति की गहन और परिवर्तनकारी शक्ति का उदाहरण है।

भक्ति के माध्यम से, भक्त भगवान के साथ जुड़ाव की गहरी भावना का अनुभव करते हैं, भगवान विष्णु की सुरक्षा, मार्गदर्शन और आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। विष्णु पुराण प्रेम, विनम्रता और निस्वार्थ सेवा से चिह्नित भक्ति जीवन की वकालत करता है, इस बात पर जोर देता है कि सच्ची भक्ति आध्यात्मिक मुक्ति और भगवान के साथ शाश्वत मिलन की ओर ले जाती है।

संक्षेप में, विष्णु पुराण धर्म और भक्ति को पूरक सिद्धांतों के रूप में प्रस्तुत करता है जो व्यक्तियों को एक धार्मिक और आध्यात्मिक रूप से पूर्ण जीवन की ओर ले जाते हैं। धर्म सांसारिक आचरण के लिए नैतिक ढाँचा प्रदान करता है, जबकि भक्ति ईश्वरीय कृपा और परम मुक्ति प्राप्त करने का प्रत्यक्ष और अंतरंग साधन प्रदान करती है। साथ में, वे पुराण की आध्यात्मिक शिक्षाओं का मूल बनाते हैं, जो सद्भाव और ज्ञान के मार्ग पर प्रकाश डालते हैं।

सांस्कृतिक प्रभाव

विष्णु पुराण ने भारतीय संस्कृति पर गहरा और स्थायी प्रभाव डाला है, जिसने धार्मिक अभ्यास, कला, साहित्य और सामाजिक मानदंडों के विभिन्न पहलुओं को आकार दिया है। इसकी कथाएँ और शिक्षाएँ भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत में पाठ के महत्व को दर्शाते हुए गहराई से प्रतिध्वनित होती रहती हैं।

धार्मिक प्रथाएँ और त्यौहार

विष्णु पुराण ने हिंदू धार्मिक प्रथाओं और अनुष्ठानों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। विष्णु के अवतारों, विशेष रूप से राम और कृष्ण की कहानियाँ, कई हिंदू त्योहारों का अभिन्न अंग हैं। उदाहरण के लिए, राम के जीवन और कारनामों को राम नवमी और दशहरा के दौरान मनाया जाता है, जबकि कृष्ण का जन्म और कर्म जन्माष्टमी और होली के दौरान केंद्रीय होते हैं। ये त्यौहार न केवल धार्मिक अनुष्ठान हैं, बल्कि जीवंत सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हैं, जिनमें विस्तृत अनुष्ठान, प्रदर्शन और सामुदायिक भागीदारी शामिल है।

पुराण विष्णु से जुड़े पवित्र स्थलों की तीर्थ यात्रा के महत्व पर भी जोर देता है, जो एक ऐसी परंपरा को बढ़ावा देता है जो हिंदू धार्मिक जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। विष्णु और उनके अवतारों को समर्पित मंदिर, जैसे कि तिरुपति वेंकटेश्वर मंदिर और पुरी में जगन्नाथ मंदिर, भारत के सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थलों में से हैं।

कला और साहित्य

विष्णु पुराण की समृद्ध कथाओं ने भारतीय कला और साहित्य के एक विशाल समूह को प्रेरित किया है। विष्णु के अवतारों, विशेष रूप से राम और कृष्ण का चित्रण, रामायण और महाभारत सहित शास्त्रीय भारतीय साहित्य में एक लोकप्रिय विषय रहा है, साथ ही अनगिनत क्षेत्रीय कार्य भी।

दृश्य कलाओं में, पुराण की कहानियों को मूर्तियों, चित्रों और मंदिर वास्तुकला में चित्रित किया गया है। मंदिर की दीवारों पर जटिल नक्काशी, लघु चित्रों के जीवंत रंग और भरतनाट्यम और कथकली जैसे पारंपरिक नृत्य रूपों में दर्शाए गए विस्तृत दृश्य सभी पुराण की कथाओं से काफी प्रभावित हैं।

प्रदर्शन कलाएँ

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

भारतीय शास्त्रीय नृत्य और संगीत विष्णु पुराण से गहराई से प्रभावित हैं। कृष्ण के चंचल कारनामों और राम के वीरतापूर्ण कार्यों की कहानियाँ शास्त्रीय नृत्य प्रदर्शनों में केंद्रीय विषय हैं। भरतनाट्यम, ओडिसी और कथक नृत्य अक्सर इन अवतारों के जीवन के प्रसंगों को नाटकीय रूप देते हैं, जो भावपूर्ण हाव–भाव और जटिल नृत्यकला के माध्यम से आध्यात्मिक और नैतिक संदेश देते हैं। इसी तरह, भारतीय शास्त्रीय संगीत, विशेष रूप से भजन (भक्ति गीत) और कीर्तन, अक्सर पुराण के विषयों पर आधारित होते हैं, जो विष्णु और उनके अवतारों की महिमा का जश्न मनाते हैं। पुराण का प्रभाव रंगमंच तक फैला हुआ है, जिसमें रामलीला और रासलीला जैसे पारंपरिक रूप राम और कृष्ण के जीवन के प्रसंगों को फिर से पेश करते हैं।

सामाजिक मानदंड और मूल्य

विष्णु पुराण ने हिंदू समाज के भीतर सामाजिक मानदंडों और मूल्यों को आकार देने में भी भूमिका निभाई है। धर्म (धार्मिकता) और जीवन के विभिन्न चरणों और सामाजिक भूमिकाओं से जुड़े नैतिक कर्तव्यों पर इसके जोर ने पारंपरिक भारतीय समुदायों के भीतर नैतिक और कानूनी ढाँचों को प्रभावित किया है। कथाएँ निष्ठा, साहस, भक्ति और न्याय जैसे गुणों का उदाहरण देती हैं, जो व्यक्तिगत आचरण और सामाजिक संपर्क के लिए नैतिक मॉडल प्रदान करती हैं।

संक्षेप में, विष्णु पुराण का सांस्कृतिक प्रभाव व्यापक और बहुआयामी है, जो धार्मिक प्रथाओं, कला, साहित्य, प्रदर्शन कला और सामाजिक मूल्यों में व्याप्त है। इसकी कहानियाँ और शिक्षाएँ लाखों लोगों को प्रेरित और मार्गदर्शन करती रहती हैं, जो भारत के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक ताने–बाने में पाठ की स्थायी विरासत को दर्शाती हैं। अपनी समृद्ध कथा परंपरा के माध्यम से, विष्णु पुराण न केवल प्राचीन ज्ञान को संरक्षित करता है, बल्कि एक जीवंत और गतिशील सांस्कृतिक विरासत को भी बढ़ावा देता है जो आज भी प्रासंगिक है।

आध्यात्मिक शिक्षाएँ

विष्णु पुराण गहन आध्यात्मिक शिक्षाओं के भंडार के रूप में कार्य करता है, जो नैतिक जीवन, ईश्वर के प्रति समर्पण और मुक्ति (मोक्ष) की खोज पर मार्गदर्शन प्रदान करता है। हिंदू दर्शन के सिद्धांतों पर आधारित यह पुराण आध्यात्मिक अभ्यास के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रस्तुत करता है, जो नैतिक मूल्यों, अनुष्ठानों और दार्शनिक अंतर्दृष्टि को आध्यात्मिक प्राप्ति की दिशा में एक सुसंगत मार्ग में एकीकृत करता है।

1. धर्म और नैतिक मूल्यरू

विष्णु पुराण की आध्यात्मिक शिक्षाओं का केंद्र धर्म या धार्मिक आचरण की अवधारणा है। धर्म में नैतिक मूल्य, कर्तव्य और नैतिक सिद्धांत शामिल हैं जो व्यक्तियों को सामंजस्यपूर्ण जीवन और आध्यात्मिक विकास की ओर मार्गदर्शन करते हैं। पुराण व्यक्ति के स्वधर्म (व्यक्तिगत कर्तव्य) का पालन करने और जीवन के सभी पहलुओं में सत्य, न्याय, करुणा और अहिंसा के सार्वभौमिक सिद्धांतों को बनाए रखने के महत्व पर जोर देता है।

2. विष्णु की भक्तिरू

विष्णु के प्रति भक्ति या प्रेमपूर्ण भक्ति, विष्णु पुराण में आध्यात्मिक अभ्यास की आधारशिला है। पुराण भक्ति के गुणों को मुक्ति के मार्ग के रूप में प्रस्तुत करता है, बिना शर्त प्यार, समर्पण और ईश्वर की सेवा की शक्ति पर जोर देता है। प्रह्लाद, ध्रुव और वृंदावन की गोपियों जैसे भक्तों की कहानियों के माध्यम से, पुराण हृदय को शुद्ध करने, सांसारिक आसक्तियों पर काबू पाने और विष्णु के साथ आध्यात्मिक मिलन प्राप्त करने में भक्ति की परिवर्तनकारी क्षमता को दर्शाता है।

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

ISSN: 2348-5612 | Vol. 11 | Issue 2 | Apr-Jun 2024 | Peer Reviewed & Refereed

3. मोक्ष (मुक्ति)रू

विष्णु पुराण में आध्यात्मिक अभ्यास का अंतिम लक्ष्य मोक्ष है, या जन्म और मृत्यु (संसार) के चक्र से मुक्ति। पुराण सिखाता है कि धार्मिक जीवन जीने, विष्णु की भक्ति करने और ध्यान, निस्वार्थ सेवा और शास्त्रों के अध्ययन जैसे आध्यात्मिक अनुशासन में संलग्न होने से व्यक्ति कर्म के चक्र से परे जा सकता है और मुक्ति प्राप्त कर सकता है। मोक्ष को चेतना की उच्चतम अवस्था के रूप में दर्शाया गया है, जिसकी विशेषता शाश्वत आनंद, ज्ञान और ईश्वर के साथ एकता है।

4. कर्म और पुनर्जन्मरू

विष्णु पुराण कर्म के सिद्धांत, कारण और प्रभाव के नियम की व्याख्या करता है, जो जन्म और पुनर्जन्म के चक्र को नियंत्रित करता है। यह सिखाता है कि प्रत्येक क्रिया, विचार और इरादे के परिणाम होते हैं जो इस जीवन और अगले जीवन में व्यक्ति के भाग्य को आकार देते हैं। पुनर्जन्म (संसार) की अवधारणा के माध्यम से, पुराण स्पष्ट करता है कि कैसे आत्मा विभिन्न शरीरों के माध्यम से देहांतरित होती है, पिछले कर्मों (कर्म) के परिणामों का अनुभव करती है जब तक कि वह आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त नहीं कर लेती।

5. ज्ञान और आत्म–साक्षात्काररू

विष्णु पुराण आत्म–साक्षात्कार और मुक्ति प्राप्त करने में ज्ञान या आध्यात्मिक ज्ञान के महत्व पर जोर देता है। यह सिखाता है कि सच्चा ज्ञान अस्तित्व के शाश्वत सत्य, स्वयं (आत्मा) की प्रकृति और परम वास्तविकता (ब्रह्म) को समझने से उत्पन्न होता है। दार्शनिक संवादों और प्रवचनों के माध्यम से, पुराण ब्रह्म की अद्वैत प्रकृति, भौतिक दुनिया (माया) की भ्रामक प्रकृति और सभी अस्तित्व की एकता जैसी आध्यात्मिक अवधारणाओं को स्पष्ट करता है।

6. वैराग्य और त्यागरू

विष्णु पुराण में सांसारिक आसक्तियों से वैराग्य और भौतिक इच्छाओं के त्याग को आवश्यक आध्यात्मिक अनुशासन के रूप में महत्व दिया गया है। पुराण सिखाता है कि सच्ची खुशी और तृप्ति बाहरी संपत्ति या उपलब्धियों के बजाय आंतरिक संतोष और आध्यात्मिक बोध से आती है। ऋषियों, तपस्वियों और प्रबुद्ध व्यक्तियों के उदाहरणों के माध्यम से, पुराण साधकों को वैराग्य विकसित करने और आध्यात्मिक सत्य की खोज पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करता है।

7. सेवा और करुणारू

विष्णु पुराण में दूसरों की सेवा और सभी प्राणियों के प्रति करुणा आध्यात्मिक जीवन के अभिन्न अंग हैं। पुराण सिखाता है कि दूसरों की निस्वार्थ सेवा करने और करुणा का अभ्यास करने से व्यक्ति का हृदय शुद्ध होता है, विनम्रता आती है और उसे ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है। दया, दान और परोपकार के कार्यों के माध्यम से, व्यक्ति विष्णु के प्रति अपनी भक्ति व्यक्त करते हैं और समाज के कल्याण में योगदान देते हैं। संक्षेप में, विष्णु पुराण की आध्यात्मिक शिक्षाएँ साधकों को आत्म–साक्षात्कार और मुक्ति के मार्ग पर एक व्यापक मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। हिंदू दर्शन, नैतिकता और भक्ति के कालातीत ज्ञान में निहित, ये शिक्षाएँ अस्तित्व की प्रकृति, जीवन के उद्देश्य और परम आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करने के साधनों के बारे में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं। पुराण की कथाओं, संवादों और दार्शनिक प्रवचनों के माध्यम से, साधकों को धार्मिकता, भक्ति और आत्म–परिवर्तन का जीवन जीने के लिए प्रेरित किया जाता है, अंततः अपनी दिव्य क्षमता का एहसास करते हुए और शाश्वत सत्य के साथ एकता प्राप्त करते हुए।

निष्कर्ष

OPEN ACCESS
© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

विष्णु पुराण ज्ञान, आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक समृद्धि का एक कालातीत स्रोत है जो अस्तित्व और आध्यात्मिक संतुष्टि को उजागर करता है। पुराण ब्रह्मांड विज्ञान, पौराणिक कथाओं, नैतिकता और भक्ति को एक कथा में जोड़ता है जो साधकों को आत्म–साक्षात्कार और स्वतंत्रता की ओर ले जाता है। निष्कर्ष में, विष्णु पुराण एक धार्मिक ग्रंथ से कहीं अधिक हैय यह हिंदू दर्शन, विश्वासों और अनुष्ठानों सहित भारत के आध्यात्मिक इतिहास का प्रतीक है। धर्म, भक्ति, कर्म और मोक्ष पर इसकी शिक्षाओं ने साधकों की पीढ़ियों को धार्मिकता, प्रेम और भक्ति से जीने के लिए प्रेरित किया है। विष्णु पुराण की आध्यात्मिक शिक्षाएँ हमें शाश्वत सत्य की याद दिलाती हैं जो समय और समाज से परे हैं। एक निरंतर बदलती दुनिया में, सार्वभौमिक प्रेम, करुणा और सेवा का पुराण का संदेश सत्य और ज्ञान के साधकों को शरण, प्रेरणा और आशा देता है। चिरस्थायी विष्णु पुराण आज के तेज–तर्रार, भौतिकवादी समाज में आंतरिक आत्मनिरीक्षण, नैतिक जीवन और आध्यात्मिक प्रगति पर जोर देता है। यह विनम्रता, करुणा और प्रशंसा को बढ़ावा देता है, जिससे हमारे अपने, दूसरों और ईश्वर के साथ संबंध गहरे होते हैं। आइए हम विष्णु पुराण की विरासत का अनुसरण करें और इसके पाठों को अपनाकर वैश्विक शांति और सद्भाव को बढ़ावा दें। इस प्राचीन ग्रंथ की आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और सांस्कृतिक विविधता को भावी पीढ़ियों को प्रेरित और प्रबुद्ध करना चाहिए।

संदर्भ

1. विल्सन, एच. एच. (1840). विष्णु पुराणरू हिंदू पौराणिक कथाओं और परंपरा की एक प्रणाली। लंदनरू जॉन मुरे।
2. रोचर, एल. (1986)। पुराण। वीसबैडेनरू ओटो हैरासोविट्ज।
3. राव, टी. ए. जी. (2002)। पुराण पेरेनिसरू हिंदू और जैन ग्रंथों में पारस्परिकता और परिवर्तन। अल्बानीरू स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क प्रेस।
4. डिमिट, सी., और वैन ब्यूटेनन, जे. ए. बी. (1978)। शास्त्रीय हिंदू पौराणिक कथाएँरू संस्कृत पुराणों में एक पाठक। फिलाडेल्फियारू टेम्पल यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. विष्णु पु० 4/20/52–53
6. वही 2/24/118–119
7. विष्णु पु० 3/6/20
8. पार्जिटर एशिएन्ट इण्डियन हिस्टारिकल ट्रेडिशन पृ० ४०
9. फर्क्यूहर आउट लाइन्स पृ० 143–144
10. विण्टरविल्स हिस्ट्री आफ इण्डियन लिटरेचर भगर । पृ० 545
11. विष्णु पु० 4/24/55
12. वैद्य हिस्ट्री आफ मेडिवल हिन्दू इण्डिया भाग 1 पृ० 350
13. जे० बी० आर० ए० यस० 1925 पृ० 155 आ०
14. महाभारत 12] 321–340
15. विष्णु पु० 5/18/58] ब्रह्म, 192 भागवत 10/40/21 पथ०
16. उत्तर 272/313–314

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

ISSN: 2348-5612 | Vol. 11 | Issue 2 | Apr-Jun 2024 | Peer Reviewed & Refereed

17. कूर्म 41–95
18. आर०सी० हाजरा स्टडीज इन द पुराणिक रिकार्डस आन हिन्दू राइट्स एण्ड कस्टन्स-
19. डा० सर्वानन्द पाठक विष्णु पुराण का भाग पृ० 15 डा० सुरेन्द्र नाथ दास गुप्ता हिस्ट्री आफ इण्डियन फिलासफी भाग 3 पृ० 501] पाटी
20. पॉवर्स, जॉन. 1993- साधिनिर्मोचन–सूत्र में हेर्मेनेयुटिक्स और परंपरा.लीडेनरू ई.जे. ब्रिल.

© 2024 Published by Shodh Sagar. This is an open access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com